

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 19, मसीह के साथ एकता और बाइबिल की कहानी: अनंत काल अतीत, सृष्टि, पतन, अवतार, मसीह का कार्य और नई सृष्टि

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, मसीह के साथ एकता और बाइबिल की कहानी: अनंत काल, सृष्टि, पतन, अवतार, मसीह का कार्य और नई सृष्टि।

हम मसीह के साथ एकता और बाइबिल की कहानी के बारे में बात करने के लिए तैयार हैं। हमने पुराने नियम, संक्षिप्त सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीह के साथ एकता की नींव रखी है। फिर हमने जॉन के सुसमाचार में मसीह के साथ एकता की खोज की और फिर, कई व्याख्याओं के लिए, पॉल में मसीह के साथ एकता की खोज की, जो इस शिक्षा का मुकुट है।

अब समय आ गया है कि हम पीछे हटकर पूरी बाइबिल कहानी को देखें और जानें कि यह मसीह के साथ एकता के बारे में क्या सिखाती है। मैं संक्षेप में केवल शीर्षकों को पढ़ूंगा क्योंकि मैंने पिछले व्याख्यान में उनके साथ थोड़ा बहुत काम किया था। एकता और अनंत काल अतीत, एकता और सृष्टि, एकता और पतन, एकता और अवतार, एकता और मसीह का उद्धार कार्य, और एकता और नई सृष्टि।

एकता और अनंत काल अतीत। जैसा कि हमने देखा है, दो पौलीन मार्ग सिखाते हैं कि परमेश्वर ने सृष्टि से पहले उद्धार के लिए अपने लोगों को चुना। इफिसियों 1:3 और 4, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता धन्य हैं, जिन्होंने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में हर प्रकार की आत्मिक आशीष से आशीषित किया है, जैसा कि उन्होंने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुना था, ताकि हम उनके सामने पवित्र और निर्दोष हों।

और फिर 2 तीमुथियुस 1:8 और 9, हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से सुसमाचार के लिये दुख उठा, जिस ने हमें बचाया और पवित्र बुलाहट में बुलाया, हमारे कामों के कारण नहीं, परन्तु अपने उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार, जो उसने सनातन काल से पहले मसीह यीशु में हमें दिया। 2 तीमुथियुस 1:8 और 9। पहले अंश में, पौलुस सिखाता है कि सृष्टि से पहले, परमेश्वर ने अंतिम पवित्रता के लक्ष्य के साथ पापियों को बचाने का चुनाव किया। दूसरे अंश में, प्रेरित तीमुथियुस को परमेश्वर की सामर्थ की ओर संकेत करके दुखों के बीच आध्यात्मिक रूप से साहसी होने के लिए प्रोत्साहित करता है।

परमेश्वर हमें बचाता है और हमें वर्तमान पवित्रता के लिए बुलाता है। हम अपने प्रदर्शन से नहीं बल्कि परमेश्वर के उद्देश्य, योजना और अनुग्रह से बचाए जाते हैं; हमारे गुणों के विरुद्ध दिया गया उसका अनुग्रह। और इफिसियों 1:4 में पौलुस ने जो कहा, उसके समान, यह अनुग्रह हमें युगों के आरंभ होने से पहले, वस्तुतः अनन्त युगों से पहले दिया गया था।

2 तीमुथियुस 1 :9. यह ध्यान देने योग्य है कि दो अनुच्छेदों में जहाँ पौलुस सिखाता है कि ईश्वरीय चुनाव शाश्वत है, वह यह भी सिखाता है कि यह मसीह में था, जैसा कि उसने हमें जगत की नींव रखने से पहले उसमें चुना था, इफिसियों 1:4. परमेश्वर ने हमें हमारे कामों के कारण नहीं, बल्कि अपने उद्देश्य और अनुग्रह के कारण बचाया, जो उसने युगों के आरंभ होने से पहले मसीह यीशु में हमें दिया था। हम पॉलिन के सामान्य वाक्यांश, मसीह में, के इन दो असामान्य उपयोगों को कैसे समझें? परमेश्वर ने हमें जगत की नींव रखने से पहले उसमें चुना, इन शब्दों को समझने के लिए कम से कम तीन दृष्टिकोण हैं। पहला दृष्टिकोण आर्मिनियाई विद्वानों द्वारा आगे बढ़ाया गया है, जिनके लिए मेरे मन में बहुत सम्मान है और जिन्हें मैं मसीह में भाइयों के रूप में स्वीकार करता हूँ, जो मसीह में को उद्धार के लिए एक शर्त के रूप में समझते हैं जिसे लोगों को पूरा करना चाहिए।

जैक कॉटरेल इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं। ईश्वर पहले से जानता है कि कोई व्यक्ति उद्धार के लिए उस शर्त को पूरा करेगा या नहीं जिसे उसने संप्रभुतापूर्वक लगाया है। बुनियादी और सर्वव्यापी शर्त यह है कि क्या कोई व्यक्ति मसीह में है, यानी क्या उसने मसीह के साथ एक उद्धारक संघ में प्रवेश किया है जिसके माध्यम से वह मसीह के उद्धारक कार्य के सभी लाभों में हिस्सा लेता है।

इफिसियों 1:4 का यही अर्थ है, जो कहता है कि उसने हमें उसमें, अर्थात् मसीह में चुना है। दूसरा दृष्टिकोण, जिसका उपयोग आर्मिनियन भी करते हैं, पॉल के शब्दों को इस अर्थ में समझना है कि परमेश्वर ने मुख्य रूप से मसीह को चुना और दूसरे स्थान पर उद्धार के लिए मनुष्यों को चुना; अर्थात् वे जिन्हें उसने पहले से ही जान लिया था कि वे मसीह में विश्वास करेंगे। जेरी वाल्स और जोसेफ डी'एंजेलो इस दृष्टिकोण को अपनाते हैं।

यीशु स्वयं चुने हुए व्यक्ति हैं, पूर्वनिर्धारित व्यक्ति हैं। जब भी कोई व्यक्ति विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उनमें शामिल हो जाता है, तो वह परमेश्वर द्वारा चुने गए यीशु की विशेष स्थिति में हिस्सा लेने लगता है। चुनाव के इस दृष्टिकोण को पूरी तरह से, सबसे अधिक पूरी तरह से, सामूहिक प्रकृति के चुनाव, विश्वास की निर्णायक भूमिका और लोगों को उनके नियत अंत तक लाने के लिए परमेश्वर की व्यापक विश्वसनीयता को ध्यान में रखना चाहिए।

जैक कॉटरेल का सशर्त चुनाव क्लार्क पिनाॅक द्वारा संपादित ग्रेस अनलिमिटेड नामक पुस्तक में था। जेरी वाल्स और जोसेफ डी'एंजेलो ने *व्हाई आई एम नॉट ए कैल्विनिस्ट लिखा, और मैं यह भी जोड़ सकता हूँ कि मेरे पूर्व सहयोगी माइकल विलियम्स और मैंने एक साथी खंड व्हाई आई एम नॉट एन आर्मिनियन* लिखा था। हम एक-दूसरे से बहस नहीं करते हैं, और वास्तव में हम एक-दूसरे के साथ काफी अच्छा व्यवहार करते हैं।

यह तरीका वाकई बहुत अच्छा है। लेकिन अगर आप अलग-अलग दृष्टिकोण जानना चाहते हैं, तो वाल्स और डी'एंजेलो द्वारा लिखित *क्वाई आई एम नॉट ए कैल्विनिस्ट, पीटरसन और विलियम्स द्वारा लिखित क्वआई आई एम नॉट एन आर्मिनीयन*, इंटरवर्सिटी प्रेस, ऐसा करने से आपको तस्वीर मिल जाएगी। तीसरे दृष्टिकोण को पेश करने से पहले, मैं पहले दो की आलोचना करूंगा।

पहला दृष्टिकोण गलत है क्योंकि जब पौलुस लिखता है कि उसने हमें दुनिया की नींव रखने से पहले उसमें चुना है, तो वह उस शर्त का उल्लेख नहीं करता है जिसे पापियों को परमेश्वर द्वारा चुने जाने के लिए पूरा करना होगा। पौलुस के शब्द किसी मानवीय प्रतिक्रिया के बारे में नहीं बताते हैं। वे परमेश्वर की संप्रभु योजना के बारे में बताते हैं। कॉटरेल और अन्य आर्मिनीयाई विश्वासियों ने प्रेरितों के शब्दों में पूर्वकल्पित विश्वास को पढ़ा ताकि वे पौलुस के शब्दों के साथ सशर्त चुनाव के अपने दृष्टिकोण को सुसंगत बना सकें।

इसके अलावा, दूसरा दृष्टिकोण भी पौलुस के विचारों को पढ़कर विफल हो जाता है। परमेश्वर ने मसीह को ईश्वरीय-मानव उद्धारक के रूप में चुना था, लेकिन इफिसियों 1 में पौलुस का मुद्दा यह नहीं है। इसके बजाय, पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर ने हमें उसमें चुना है। श्लोक 4 विश्वास की निर्णायक भूमिका के बारे में नहीं बोलता है।

वे इस विचार को पढ़ते हैं कि "जब भी कोई व्यक्ति विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से उसमें शामिल होता है, तो वह परमेश्वर द्वारा चुने गए यीशु की विशेष स्थिति में भाग लेने के लिए आता है।" इसके बजाय, यह अंश परमेश्वर की संप्रभुता और अनुग्रह की निर्णायक भूमिकाओं पर जोर देता है। मैं इफिसियों 1:3, और 4 में पौलुस के शब्दों के लिए तीसरा दृष्टिकोण अपनाता हूँ। जैसा कि हमने पहले देखा, प्रेरित अक्सर मसीह में, उसके साथ, और मसीह के साथ एकता को संदर्भित करने के लिए समानार्थी शब्दों का प्रयोग करता है।

मसीह में पौलुस द्वारा नियमित रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द, जो मसीह के साथ एकता को दर्शाता है, पूर्व-अस्थायी चुनाव के संदर्भ में उसके द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द से किस तरह भिन्न है? अंतर अस्थायी है। पौलुस लगभग हमेशा इतिहास में मसीह के साथ जुड़े लोगों के बारे में बात करता है। लेकिन इफिसियों 1:4 और 2 तीमुथियुस 1:9 में, वह मसीह में मसीह के लिए चुनाव की बात करता है।

वह सृष्टि से पहले मसीह में चुनाव की बात करता है। इन दो जगहों पर, मसीह में वास्तविक एकता का संकेत नहीं है क्योंकि हम सृष्टि से पहले अस्तित्व में नहीं थे। इसके बजाय, पौलुस हमें मसीह से जोड़ने की परमेश्वर की संप्रभु योजना के बारे में बताता है।

इस प्रकार, जब पौलुस लिखता है कि उसने हमें संसार की नींव रखने से पहले उसमें चुना है, तो उसका मतलब है कि सृष्टि से पहले, परमेश्वर ने अपनी इच्छा और प्रेम से अपने लोगों को बचाने का चुनाव किया और उन्हें बचाने के साधनों की योजना भी बनाई। उसने उन्हें अपने पुत्र और अपने सभी आध्यात्मिक लाभों के साथ आध्यात्मिक एकता में लाने की योजना बनाई। 2 तीमुथियुस 1:9, यह 2 तीमुथियुस 1:9 के लिए भी वैसा ही है। हम अपने पापों से अपने कार्यों के कारण नहीं बल्कि उसके अपने उद्देश्य और अनुग्रह के कारण मुक्त होते हैं।

ध्यान दें कि यह पाठ परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के चुनाव को सुसमाचार के प्रति मानव की प्रतिक्रिया पर निर्भर नहीं करता है। यह स्पष्ट रूप से हमारे प्रयासों से इनकार करता है जो हमें बचा सकते हैं और इसके बजाय परमेश्वर पर ध्यान केंद्रित करता है, जो अपने स्वयं के उद्देश्य और अनुग्रह के कारण उद्धार प्रदान करता है, अर्थात् उसकी संप्रभु इच्छा और करुणा। जब पौलुस कहता है कि युगों के आरंभ होने से पहले मसीह यीशु में हमें अनुग्रह प्रदान किया गया था, तो उसका मतलब है कि अनंत काल में परमेश्वर द्वारा हमारे लिए अनुग्रहपूर्ण चुनाव में हमें अपने पुत्र से जोड़ने की उसकी योजना शामिल थी ताकि हम उद्धार का अनुभव कर सकें।

परमेश्वर की सर्वोच्च और अनुग्रहपूर्ण योजना के कारण परमेश्वर के चुने हुए लोगों को उद्धार का अनुग्रह अवश्य ही मिलेगा। ये दो अंश सिखाते हैं कि परमेश्वर की ओर से एकता एक बाद की बात नहीं थी। आश्चर्यजनक रूप से, सृष्टि से पहले पापियों के उनके चुनाव में भी मसीह के साथ एकता शामिल थी।

जब परमेश्वर ने उद्धार के लिए पापियों को चुना, तो उसने उन्हें मसीह के साथ एक करना भी चुना ताकि वे उद्धार का अनुभव कर सकें। अर्थात्, उसने अपने पुत्र को अवतार में भेजने की योजना बनाई ताकि वह पाप रहित जीवन जी सके, मर सके, जी उठे, और पित्तुकुस्त के दिन आत्मा को उंडेल सके। आत्मा उस उद्धार को लागू करेगी जिसे यीशु ने आध्यात्मिक रूप से हमें मसीह के साथ जोड़कर पूरा किया था।

इस प्रकार, पिता ने हमें मसीह में चुना और युगों के आरंभ होने से पहले हमें मसीह यीशु में अनुग्रह प्रदान किया। मसीह के साथ मिलन और सृजन, अनंत काल से नियोजित, समय के साथ होता है। पवित्र आत्मा प्रभावी रूप से विश्वास करने वाले पापियों को उद्धार में मसीह के साथ लाता है।

विश्वास के द्वारा अनुग्रह द्वारा, वह उन्हें परमेश्वर के पुत्र से जोड़ता है। लेकिन चुनाव से लेकर मसीह के प्रति विश्वास, उसके साथ विश्वास की एकता तक तुरंत आगे बढ़ना, कहानी में तीन आवश्यक चरणों को छोड़ना है। पीछे की ओर बढ़ते हुए, पित्तुकुस्त, अवतार, और परमेश्वर की छवि में मानवजाति का बनाया जाना, मसीह के साथ एकता के लिए सभी आवश्यक पूर्व शर्तें हैं।

सबसे पहले, मसीह द्वारा पित्तुकुस्त के दिन पवित्र आत्मा को उंडेलना पापियों को मसीह से जोड़ने के लिए आवश्यक था।

दूसरा, अनन्त पुत्र का अवतार, हमारी मानवता में उसका हमारे साथ एक हो जाना, हमारे उद्धार को पूरा करने के लिए आवश्यक था, जिसमें मरना, उठना और आत्मा प्रदान करना शामिल है। यह उसके और हमारे बीच एक भाईचारा स्थापित करने के लिए भी आवश्यक है ताकि हम आध्यात्मिक रूप से उससे जुड़ सकें।

तीसरा, परमेश्वर की छवि और समानता में मनुष्य का सृजन, जिसने हमारे और उसके बीच एक अनुकूलता स्थापित की, मसीह से जुड़ने के लिए हमारे लिए आवश्यक था। यह हमारा वर्तमान व्यवसाय है। इसलिए, हम कह रहे हैं कि कहानी में अगले तीन चरण सृजन, अवतार और पित्तुकुस्त हैं।

आइए हम इन्हें एक-एक करके देखें। ईश्वर की छवि। मसीह के साथ एकता ईश्वर द्वारा मनुष्य की विशेष रचना के तथ्य पर आधारित है।

हालाँकि, जीव के रूप में, हम महत्वपूर्ण तरीकों से भगवान से बहुत अलग हैं, उनकी छवि के वाहक के रूप में, हम उनके जैसे हैं। रॉबर्ट लेथम संक्षिप्त है। उद्घरण, मसीह के साथ एकता भगवान के साथ संगत होने के लिए पुरुष और महिला के निर्माण के आधार पर टिकी हुई है।

उद्घरण बंद करें। लेथम, *शास्त्र, इतिहास और धर्मशास्त्र में मसीह के साथ एकता*। यह हमारे ईश्वर के समान बनाए जाने का परिणाम है।

उत्पत्ति में लिखा है कि परमेश्वर ने कहा, " हम मनुष्य को अपने स्वरूप में, अपनी समानता में बनाएँ। और उसे समुद्र की मछलियों, आकाश के पक्षियों, घरेलू पशुओं, सारी पृथ्वी, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार दें।" इसलिए, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया।

अपने स्वरूप के अनुसार उसने नर और नारी करके उन्हें बनाया। उत्पत्ति 1:26 , 27. परमेश्वर के प्राणियों के रूप में पुरुषों और महिलाओं में परमेश्वर की छवि मायावी है।

ऐसा लगता है कि इसमें कई तत्व शामिल हैं, जिनमें हमारी संरचना, हमारी भूमिकाएँ और रिश्तों के लिए हमारी क्षमता शामिल है। यह आखिरी तत्व है जो अब हमें चिंतित करता है। लेथम को फिर से उद्धृत करते हुए, क्योंकि मनुष्य को ईश्वर की छवि में बनाया गया था, उन्हें ईश्वर के साथ संवाद करने, उनकी ओर से ईश्वर की रचना पर शासन करने के लिए बनाया गया था।

उद्घरण समाप्त करें। परमेश्वर ने हमें अपने लिए और अपने साथ संगति में बनाया है। आदम और हवा को न तो पापी के रूप में बनाया गया था और न ही निर्दोष प्राणियों के रूप में, जो अच्छा या बुरा नहीं है, बल्कि पवित्र परमेश्वर के साथ संगति में पवित्र प्राणियों के रूप में बनाया गया था।

यह समझने के लिए कि परमेश्वर ने हमें अपने साथ संगति के लिए बनाया है और उसके साथ संगति के लिए, परमेश्वर और हमारे बीच बहुत बड़े अंतर को रेखांकित करना महत्वपूर्ण है। यशायाह 40:22. वह वही है जो पृथ्वी के घेरे के ऊपर विराजमान है, और उसके निवासी टिड्डियों के समान हैं।

यशायाह 40:22. और फिर 28. यहोवा सनातन परमेश्वर है, वह पृथ्वी की छोर तक का सृष्टिकर्ता है।

यशायाह 57:15. वह महान और महान है, जो सदाकाल तक वास करता है, जिसका नाम पवित्र है। यशायाह 57:15.

उसके सामने, सभी राष्ट्रों की तुलना में, कुछ भी नहीं है। वह उन्हें शून्य से भी कम, एक खालीपन के रूप में गिनता है। यशायाह 40:17.

बार-बार, प्रभु कहते हैं, मैं प्रभु हूँ, कोई दूसरा नहीं है। यशायाह 45:5, 6, 18, और भी बहुत कुछ। आश्चर्यजनक रूप से, यद्यपि महान परमेश्वर और हमारे बीच इतना बड़ा अंतर है, फिर भी उसने हमें अपनी छवि में बनाया है।

और इस प्रकार, हम महत्वपूर्ण तरीकों से उसके जैसे हैं। फिलिप ह्यूजेस अपनी पुस्तक में मसीह में मनुष्य की सच्ची छवि, उत्पत्ति और नियति के बारे में बताते हैं। उद्धरण, यह ज्ञान कि ईश्वर का अस्तित्व अनिवार्य रूप से और शाश्वत रूप से व्यक्तिगत है, वास्तव में हमारे विषय के लिए एक विशेष क्षण है।

मनुष्य की रचना करते समय, ईश्वर ने एक व्यक्तिगत प्राणी बनाया, जो अन्य सजीव प्राणियों के लिए असंभव तरीके से, अपने निर्माता के साथ व्यक्तिगत संगति और व्यक्तिगत प्रतिक्रिया करने में सक्षम है। तथ्य यह है कि मनुष्य एक व्यक्ति है, एक व्यक्ति, बड़े p से, मनुष्य एक व्यक्ति है, छोटा p, एक व्यक्ति, बड़े p से, एक व्यक्ति के रूप में बड़े p व्यक्ति के साथ बातचीत करने की उसकी क्षमता को स्पष्ट करता है। मसीह, सच्ची छवि।

शायद कुछ लोग यह देखकर आश्चर्यचकित हुए होंगे कि परमेश्वर के शाश्वत चुनाव में भी मसीह शामिल था। हम उसमें चुने गए थे, और हमें उसमें अनुग्रह दिया गया है। लेकिन यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब हम परमेश्वर की छवि में सृजित मानवजाति पर विचार करते हैं, तो हम अपना ध्यान मसीह की ओर मोड़ते हैं, जो परमेश्वर की सच्ची छवि है।

क्योंकि पौलुस कहता है कि मसीह परमेश्वर की छवि है, 2 कुरिन्थियों 4:4। अदृश्य परमेश्वर की छवि, कुलुस्सियों 1, 15। वास्तव में, परमेश्वर की छवि के रूप में मसीह परमेश्वर की समानता में बनाए गए मनुष्यों और मसीह के अवतार के बीच एक पुल का निर्माण करता है। छवि के रूप में मसीह हमें मानवजाति को छवि धारकों के रूप में समझने में मदद करता है।

उन्हें स्पष्ट करना चाहिए। उत्पत्ति में कहा गया है कि पुरुष और उसकी पत्नी को परमेश्वर की छवि में बनाया गया था। परमेश्वर की छवि हमारे लिए एक समान है, पहचानी जाती है।

उत्पत्ति से परमेश्वर की छवि की पहचान हमें नए नियम में मिलती है। पौलुस बताते हैं कि मसीह ही परमेश्वर की छवि है। 2 कुरिन्थियों 4:4, कुलुस्सियों 1:15.

पॉल के विचार में, मसीह दूसरे आदम के रूप में परमेश्वर की छवि है। आदम मसीह में बनाया गया था और फिर उस स्थिति से गिर गया। लेकिन अब, अनुग्रह में, हम परमेश्वर की छवि में, मसीह, दूसरे आदम में, और इस प्रकार ज्ञान, धार्मिकता और पवित्रता में नवीनीकृत हो रहे हैं।

मानवजाति में ईश्वर की छवि हमें ईश्वर के अधीन और अन्य प्राणियों के ऊपर रखती है और साथ ही, मैं श्रद्धापूर्वक कहता हूँ कि यह हमें ईश्वर के साथ संगत बनाती है। मसीह ईश्वर की सच्ची छवि है, इसका अर्थ है कि हम आरंभ में मसीह की तरह बनाए गए थे, जैसा कि ह्यूजेस बताते हैं। केवल मनुष्य के पास ही ऐसी समानताएँ हैं जो उस दुनिया के भीतर नीचे तक पहुँचती हैं जिस पर उसे रखा गया है और ऊपर तक सृष्टिकर्ता तक पहुँचती हैं, जो सभी प्राणियों का स्वामी है।

इस दोहरे संबंध के पीछे जो सत्य छिपा है, वह यह है कि सबसे पहले, मनुष्य परमेश्वर का प्राणी है।

दूसरा, परमेश्वर के प्राणियों में से केवल मनुष्य ही परमेश्वर की छवि में बना है।

तीसरा, शाश्वत पुत्र वह छवि है जिसके अनुसार मनुष्य का निर्माण हुआ।

मनुष्य को ईश्वरत्व के दूसरे व्यक्ति से जोड़ने वाला गहरा अंतरंग बंधन इस प्रकार मनुष्य के अस्तित्व के लिए संवैधानिक है। परमेश्वर के साथ हमारी अनुकूलता क्योंकि हम उसके पुत्र की छवि में बनाए गए थे, हमें शाश्वत पुत्र के अवतार को समझने में मदद करती है। मसीह के साथ एकता और पतन पर विचार करने के बाद हम इस विषय पर वापस आएं।

पवित्रशास्त्र हमारे पहले माता-पिता के पाप में गिरने के कई अलग-अलग परिणामों को सूचीबद्ध करता है, जिसमें अपराधबोध शामिल है, जिसका प्रतिकार औचित्य है, और निंदा, जिसका प्रतिकार एक ही है। भ्रष्टाचार, जिसका प्रतिकार प्रगतिशील पवित्रीकरण है, या इससे भी बेहतर, अपने सभी आयामों में पवित्रीकरण, प्रारंभिक, प्रगतिशील और अंतिम। दुख, टूटे हुए रिश्ते, बंधन, ईश्वर से अलगाव, बंधन जिसका प्रतिकार मुक्ति है, ईश्वर से अलगाव, जिसका प्रतिकार मेल-मिलाप है, और अव्यवस्था, जिसका प्रतिकार दूसरे आदम द्वारा लाया गया क्रम है।

मैं फिर से यही करूंगा, लेकिन इसके उपायों के बारे में बात नहीं करूंगा। पवित्रशास्त्र में पतन के कई परिणाम सूचीबद्ध हैं, जिनमें अपराधबोध और निंदा, भ्रष्टाचार, पीड़ा, टूटे हुए रिश्ते, बंधन, ईश्वर से अलगाव और अव्यवस्था शामिल हैं। यहाँ तक कि सृष्टि भी खराब हो जाती है, क्योंकि आदम के अपराध के कारण ईश्वर ने धरती को शाप दिया था।

उत्पत्ति 3:17 और 18. आश्चर्यजनक रूप से, परमेश्वर, अपने अनुग्रह में, मसीह के कार्य के माध्यम से पतन के उन सभी परिणामों को पलट देता है। पतन का परिणाम जो मसीह के साथ एकता के लिए मानव जाति की आवश्यकता को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है, इफिसियों 2 में सबसे स्पष्ट रूप से दिया गया है। याद रखें कि एक समय में, तुम शरीर में अन्यजातियों को खतना कहा जाता है, जो हाथों से शरीर में किया जाता है।

याद रखें कि उस समय आप मसीह से अलग हो चुके थे, इस्राएल के राष्ट्र से अलग-थलग थे, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के लिए अजनबी थे, आपके पास कोई आशा नहीं थी और आप संसार में परमेश्वर से रहित थे। इफिसियों 2:11 से 12, जिसे हम पहले पढ़ चुके हैं। पौलुस अपने गैर-यहूदी पाठकों और मसीह में आने से पहले सभी उद्धार न पाए हुए लोगों की भयानक दुर्दशा का वर्णन करता है।

ऐसा करने में, वह सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करता है कि क्यों खोए हुए मनुष्यों को मसीह से आध्यात्मिक रूप से जुड़ने की आवश्यकता है क्योंकि वे मसीह से अलग हो गए हैं - श्लोक 12। टिलमैन बताता है कि पॉल ने अन्यजातियों की पाँच कमियों की अपनी सूची में इसे पहले क्यों रखा, फ्रैंक टिलमैन की *इफिसियों पर टिप्पणी* को उद्धृत करते हुए।

यह सूची में सबसे महत्वपूर्ण आइटम है: मसीह से अलगाव। जैसा कि इसकी स्थिति इंगित करती है, यह सूची में सबसे ऊपर है, अन्य चार समस्याओं को व्यक्त करने के लिए इस्तेमाल किए गए दो दोहों के बाहर। यदि 1:4 से 13 का हर आध्यात्मिक आशीर्वाद केवल मसीह में रहने वालों के लिए उपलब्ध है, 1:3, और यदि 2:1 से 3 में वर्णित गंभीर दुर्दशा से बचाव केवल मसीह में रहने वालों के लिए है, 2:5 से 6, तो मसीह से बाहर होना पहली श्रेणी की समस्या है, मसीह से अलगाव।

मसीह के साथ एकता की हमारी ज़रूरत यह है कि हम उससे अलग हो गए हैं। मूल रूप से, एकता एक स्थानिक अवधारणा है जिसका उपयोग संबंधपरक सत्यों को संप्रेषित करने के लिए किया जाता है। ऐसा लगता है जैसे मसीह वहाँ पर पापों की क्षमा और अनन्त जीवन सहित उद्धार के सभी आशीर्वादों को लेकर मौजूद है, और हम यहाँ पर हैं, उससे अलग हो गए हैं।

हम उसके व्यक्तित्व और उन सभी लाभों से अलग हो गए हैं। यह केवल तभी संभव है जब पवित्र आत्मा इस अंतर को पाटता है और हमें उद्धारकर्ता से जोड़ता है, तभी हम उद्धार का अनुभव कर सकते हैं। उस समय तक, हम मसीह से बाहर हैं और इसलिए, हमारे पास कोई आशा नहीं है और हम संसार में परमेश्वर से रहित हैं, इफिसियों 2:12। पौलुस हमारी दुर्दशा के समाधान का वर्णन करता है।

अब मसीह यीशु में, इफिसियों 2:13, तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हो। मसीह से अलग होने का उपाय उसके साथ एकता है, उसके लहू के द्वारा निकट लाया जाना, परमेश्वर के परिवार में शामिल होना, और उसके आत्मिक मंदिर का हिस्सा बनना। समय से पहले, परमेश्वर ने हमें मसीह से जोड़कर हमें बचाने का चुनाव किया।

समय के साथ, उसने हमें अपनी छवि में, अपने जैसा, और उसके साथ संगति के लिए बनाया। वास्तव में, उसने हमें अपने बेटे की छवि में बनाया, जो परमेश्वर की सच्ची छवि है। लेकिन हमने अपने पहले माता-पिता के खिलाफ विद्रोह किया और परिणामस्वरूप, मसीह से अलग हो गए।

हालाँकि परमेश्वर हमें छोड़ सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। वह अपने बेटे के अवतार में हमारे पास आया। फिलिप ह्यूजेस ने मसीह को परमेश्वर की छवि के रूप में अवतार से जोड़ने में मदद की।

उद्धारण, ईश्वर की छवि का सिद्धांत अवतार की वास्तविकता की कुंजी है, मनुष्य की वास्तविक प्रकृति को समझने की कुंजी से कम नहीं। हमारे अस्तित्व और क्षितिज की सीमा से उत्पन्न होने वाली समस्या यह है कि ईश्वर वह कैसे बन सकता है जो वह नहीं है? ईश्वर सभी चीजों को पुनर्स्थापित करने के उद्देश्य से अपने प्राणियों के साथ एक कैसे हो सकता है? उस समस्या का उत्तर, उस रेखा में है जो मनुष्य को पवित्र त्रिमूर्ति के दूसरे व्यक्ति से जोड़ती है, जो छवि, छोटे। को छवि, बड़े। से जोड़ती है, जो मनुष्य के अस्तित्व के केंद्र में ईश्वर की छवि है, जो ईश्वर, पुत्र, ईश्वर के देवता और मानवता का पुत्र है। अवतार में हमारे साथ एक होने में, शाश्वत पुत्र शाश्वत पुत्र होना बंद नहीं करता है।

वह अवतार के बाद भी परमेश्वर बना रहता है। इसलिए, हम देहधारी पुत्र के ईश्वरत्व को स्वीकार करते हैं। यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि केवल परमेश्वर ही हमें बचा सकता है।

फिर भी अवतार आवश्यक है, क्योंकि केवल ईश्वर-मनुष्य ही हमें बचा सकता है। फिर भी अवतार आवश्यक है क्योंकि केवल ईश्वर-मनुष्य ही हमें बचा सकता है। उसे हमारे लिए मरने, हमारे शत्रुओं को हराने और हमें छुड़ाने के लिए हममें से एक बनना पड़ा, जैसा कि इब्रानियों ने जोर दिया है।

उद्धरण, चूँकि बच्चे मांस और खून में भागीदार हैं, इसलिए वह आप भी उन्हीं चीज़ों में भागीदार हुआ, ताकि मृत्यु के ज़रिए वह उस व्यक्ति को नष्ट कर सके जिसके पास मृत्यु की शक्ति है, यानी शैतान, और उन सभी को छुड़ा सके जो मृत्यु के डर से आजीवन दासता के अधीन थे, इब्रानियों 2:14 और 15। बेटे का अवतार और उसके साथ मिलन। इसके अलावा, मसीह के साथ मिलन के लिए अवतार भी ज़रूरी है, जैसा कि लेथेम समझाते हैं, उद्धरण, मसीह के साथ हमारे मिलन का आधार मसीह का अवतार में हमारे साथ मिलन है।

हम उसके साथ एक हो सकते हैं क्योंकि वह पहले हमारे साथ एक हुआ था। मानव स्वभाव को व्यक्तिगत एकता में ले जाकर, परमेश्वर के पुत्र ने खुद को मानवता से जोड़ लिया है। अब उसके पास एक मानव शरीर और आत्मा है, जिसे वह कभी नहीं त्यागेगा।

यूहन्ना अर्थात् वचन देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते पुत्र की महिमा, अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण, यूहन्ना 1:14। और पौलुस बार-बार परमेश्वर के पुत्र के देहधारण की शिक्षा देता है। फिलिप्पियों 2:5 से 8, जो मन मसीह यीशु में है, वही मन तुम में भी रखो। जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा, वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, कि दास का स्वरूप धारण कर लिया, और मनुष्य की समानता में जन्म लिया।

और मानव रूप में पाए जाने पर, उसने मृत्यु तक, यहाँ तक कि क्रूस पर मृत्यु तक, आज्ञाकारी बनकर खुद को दीन किया, फिलिप्पियों 2:5 से 8। यूहन्ना की तरह, पौलुस भी अवतार को इस रूप में मानता है कि अवतार मसीह के मिशन का एक अनिवार्य हिस्सा है, जिसमें मसीह के साथ एकता को प्रभावित करने के लिए आत्मा को उंडेलना शामिल है। वास्तव में, मसीह के साथ एकता की बात करते समय अवतार के महत्व पर अधिक जोर देना मुश्किल है। अवतार अपने आप में हमें मसीह से नहीं जोड़ता है, लेकिन यह एकता के लिए एक आवश्यक पूर्व शर्त है।

लेथेम ने संक्षिप्त रूप से कहा, "अवतार में मसीह का हमारे साथ मिलन, उसके साथ हमारे मिलन की नींव है, अभी और अनंत भविष्य में भी, उद्धरण बंद करें।" मसीह के साथ मिलन की बाइबल की शिक्षा को समझने में अगला कदम यीशु की उद्धारकारी उपलब्धि को शामिल करता है, जिसमें पिन्तेकुस्त के दिन उसने जो किया, वह भी शामिल है। अवतार और पिन्तेकुस्त के बीच संबंध को लेथेम ने खींचा है।

उद्धारण, मसीह ने खुद को पूरी तरह से हमारे साथ जोड़ लिया है। वह हमारे साथ एक है। उसने हमेशा के लिए हमारी प्रकृति को व्यक्तिगत एकता में ले लिया।

मसीह के साथ एकता के लिए अवतार अपरिहार्य आधार है। चूँकि मसीह ने अवतार में खुद को हमारे साथ जोड़ा है, इसलिए हम पवित्र आत्मा के द्वारा उसके साथ जुड़ सकते हैं। परमेश्वर का पुत्र दुनिया का एकमात्र मध्यस्थ है, और उसने हमें बचाने के लिए हममें से एक बनने से लेकर दूसरे आगमन तक सब कुछ किया, जो उसने अभी तक नहीं किया है।

उद्धार कार्य का हृदय और आत्मा पापियों के स्थान पर उसका मरना और तीसरे दिन विजय के लिए जी उठना है। क्या मसीह का अवतार अपने आप में उद्धार करता है? इसका उत्तर है नहीं। जैसा कि मैंने पिछले खंड में लिखा है, जब परमेश्वर का शाश्वत पुत्र मनुष्य बन जाता है, तो मानवजाति को उद्धार स्वतः नहीं मिलता।

लेकिन क्या मसीह का अवतार उसके बाद होने वाले उद्धार कार्यों के लिए केंद्रीय पूर्व शर्त के रूप में उद्धार करता है? इसका उत्तर है हाँ। केवल एक दिव्य-मानव उद्धारक ही ऐसा कर सकता है। यदि पुत्र मनुष्य नहीं बनता, तो वह पाप रहित मानव जीवन नहीं जी सकता था, मर नहीं सकता था, और अपने लोगों को बचाने के लिए फिर से जीवित नहीं हो सकता था।

वह स्वर्ग में नहीं चढ़ सकता था, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर नहीं बैठ सकता था, पवित्र आत्मा को नहीं उंडेल सकता था, हमारे लिए मध्यस्थता नहीं कर सकता था, और वह फिर से नहीं आ सकता था। इन उद्धार कार्यों को करने के लिए, उसे हम में से एक बनना था। उस महत्वपूर्ण अर्थ में, मसीह का अवतार उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए आवश्यक शर्त के रूप में बचाता है।

यह मेरी पुस्तक, *पुत्र द्वारा पूर्ण किया गया उद्धार*, मसीह का कार्य। पिनतेकुस्त से है। मसीह की उद्धारकारी उपलब्धि का उसके साथ एकता से क्या सम्बन्ध है? यहाँ मुख्य बात पिनतेकुस्त है।

पिनतेकुस्त के दिन आत्मा का आना मसीह के साथ विश्वास की एकता को सक्षम बनाता है। पिनतेकुस्त मसीह का उतना ही उद्धारक कार्य है जितना कि उसका क्रूस पर चढ़ना और पुनरुत्थान। जब हम पिनतेकुस्त के बारे में सोचते हैं तो हम सही रूप से पवित्र आत्मा के बारे में सोचते हैं।

लेकिन यह समझना महत्वपूर्ण है कि मसीह ही वह व्यक्ति था जिसने पिनतेकुस्त के दिन आत्मा को उंडेला था। पिनतेकुस्त बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना की भविष्यवाणी की पूर्ति है। यूहन्ना ने कहा, मैं तुम्हें पश्चाताप के लिए जल से बपतिस्मा दूंगा, लेकिन जो मेरे बाद आने वाला है वह मुझसे अधिक शक्तिशाली है, मैं उसके जूते उठाने के योग्य नहीं हूँ।

वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा, मत्ती 3:11। यह मरकुस, लूका और यूहन्ना में भी है। और यह प्रेरितों के काम 1 में यीशु के शब्दों की पूर्ति है। यीशु के शब्दों की पूर्ति में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की भविष्यवाणी की पूर्ति है। मत्ती 3:11, मरकुस 1:7 और 8, लूका 3:16, यूहन्ना 1:32 से 34 में।

उनके साथ रहते हुए, लूका ने लिखा कि उसने उन्हें यरूशलेम से दूर न जाने का आदेश दिया, बल्कि पिता के वादे का इंतज़ार करने को कहा, जिसके बारे में उसने कहा कि तुमने मुझसे सुना है। क्योंकि यूहन्ना ने पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन तुम अब से कुछ ही दिनों में पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे। इसलिए, प्रेरितों के काम 1:4 और 5 में यीशु जानबूझकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की भविष्यवाणी से जुड़ते हैं।

पिन्तेकुस्त यीशु मसीहा का कार्य है, जितना कि क्रूस पर मरना और मृतकों में से जी उठना। यह उन कार्यों की तरह ही विलक्षण और अप्रतिम है। यह एक अनोखी घटना है जिसमें जी उठे, स्वर्गारोहित प्रभु यीशु अपने चर्च को हमेशा के लिए एक बार पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हैं, इस कार्य द्वारा महान कार्य संपन्न करते हैं।

पिन्तेकुस्त एक सार्वजनिक घटना है जिसमें मसीह नई वाचा की घोषणा करता है, नई सृष्टि का उद्घाटन करता है, और नए समुदाय को आत्मा प्रदान करता है। यह इनमें से अंतिम है जो वर्तमान में हमारे लिए चिंता का विषय है। पिन्तेकुस्त के दिन मसीह ने कलीसिया पर जो आत्मा डाली, वही हमें मसीह से जोड़ती है।

इस प्रकार, पेंटेकोस्ट आत्मा का भेजा जाना है जो मसीह के साथ विश्वास की एकता को सक्षम बनाता है, जैसा कि लेथेम पुष्टि करता है। उद्धारण, मसीह शाश्वत पुत्र, मानव प्रकृति को अपने आप में एकजुट करके, अब हमें पवित्र आत्मा के द्वारा अपने साथ जोड़ता है क्योंकि आत्मा हमें विश्वास में उसके पास खींचती है। यह एक व्यक्तिगत मिलन नहीं है क्योंकि आत्मा हमें उसके पास खींचती है क्योंकि आत्मा हमें विश्वास में उसके पास खींचती है।

परमेश्वर के पुत्र के अवतार में हमने जो व्यक्तिगत एकता देखी वह पूरी तरह से अनोखी है। हम शाश्वत नहीं बनते, और हम देवता नहीं बनते। इस मामले में, पवित्र आत्मा असंख्य मानव व्यक्तियों और पापियों में प्रवेश करती है, उनमें वास करती है, उन्हें संतुष्ट करती है, और उन्हें मसीह पुत्र के साथ एकता में लाती है।

तो, हम अंतिम चरण के लिए तैयार हैं। हमने अतीत में एकता और अनंत काल, एकता और सृष्टि, पतन में एकता, अवतार में एकता और मसीह के कार्य में एकता देखी है, विशेष रूप से पिन्तेकुस्त पर आत्मा को उंडेलने में, अब एकता और नई सृष्टि। मसीह के साथ एकता का लक्ष्य परमेश्वर के लोगों के अंतिम उद्धार और स्वर्ग और पृथ्वी के उद्धार से कम नहीं है।

सृष्टि स्वयं पतन के अभिशाप के अधीन थी। आदम के पाप के बाद, परमेश्वर ने उससे कहा, तेरे कारण भूमि शापित है; तू जीवन भर कष्ट के साथ उसमें से खाएगा, वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी। उत्पत्ति 3:17 और 18।

शास्त्र ब्रह्मांड के उद्धार, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी के आने की भी भविष्यवाणी करता है। यशायाह 65:17 से 25, 66:22, 23, मत्ती 19:28, रोमियों 8:20 से 22:2, 2 पतरस 3:10 से 13, प्रकाशितवाक्य 21:22। एक बार फिर, यशायाह 65:17 से 25, यशायाह 66:22, 23, मत्ती 19:28, रोमियों 8:20 से 22, 2 पतरस 3:10 से 13, और प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और 22।

परमेश्वर की योजना में, मसीह का कार्य सृष्टि की बीमारी का उपचार है। यहाँ मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का ब्रह्मांडीय प्रभाव है। उद्धरण: परमेश्वर मसीह के माध्यम से सभी चीज़ों को अपने साथ मिलाने के लिए प्रसन्न था, चाहे वे पृथ्वी पर हों या स्वर्ग में, अपने क्रूस के लहू से शांति स्थापित करके।

कुलुस्सियों 1:19 और 20. मसीह की उद्धारकारी उपलब्धि न केवल मानवजाति को बचाती है, बल्कि संसार को भी बचाती है। रोमियों 8:20 से 22, सृष्टि व्यर्थता के अधीन थी, स्वेच्छा से नहीं, बल्कि उसके अधीन करने वाले के कारण।

इस आशा से कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी। क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर पीड़ाओं में कराहती है। रोमियों 8:20 से 22.

उल्लेखनीय रूप से, पौलुस सिखाता है कि परमेश्वर अंततः सभी चीज़ों को मसीह में एक कर देगा, जिसे, फिर से, हमने पहले देखा है। अब, हम इसे मसीह के साथ एकता के बाइबिल धर्मशास्त्र के संदर्भ में रखते हैं। इफिसियों 1:7 से 10।

हम को उसमें, अर्थात् मसीह में, उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उस ने सारी बुद्धि और समझ सहित हम पर उदारता से दिया है, और अपनी इच्छा का भेद हमें बताया है, उस उद्देश्य के अनुसार जिसे उस ने मसीह में समय की परिपूर्णता की योजना के रूप में स्थापित किया है, कि सब वस्तुएं उस में, चाहे स्वर्ग की हों या पृथ्वी की, एक साथ मिलें। इफिसियों 1:7 से 10. पौलुस समय और स्थान की सीमाओं का विस्तार करता है, जब मसीह की हिंसक, छुटकारे वाली मृत्यु, उसके लहू के बारे में बात करने के बाद, वह कहता है कि परमेश्वर ने अपनी इच्छा का भेद मसीह में समय की परिपूर्णता की योजना के रूप में स्थापित करने के लिए प्रकट किया है, कि सब वस्तुएं उस में एक साथ मिलें।

यह उन कई अवसरों में से एक है, जिन्हें पौलुस मसीह में मसीह की एकता को सीधे दिखाने के लिए इस्तेमाल करता है। विश्वासी मसीह के साथ एक हो जाएँगे। मसीह के साथ एकता, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान का आत्मा द्वारा अनुप्रयोग, इस प्रकार अंत में ब्रह्मांडीय प्रभाव डालता है।

प्रकाशितवाक्य 22:3 सारगर्भित है। उद्धरण, अब कोई भी चीज़ शापित नहीं होगी। प्रकाशितवाक्य 22:3। और बेशक, एकता उन लोगों के लिए भी अद्भुत प्रभाव डालती है जिन्हें परमेश्वर ने अपने लिए बनाया था, जिन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह किया, जिनके लिए देहधारी पुत्र मरा और जी उठा, और जिन पर आत्मा यीशु के उद्धार कार्य के लिए लागू होती है।

दरअसल, पॉल कहते हैं कि व्यक्तिगत विश्वासी पहले से ही नई सृष्टि का हिस्सा हैं। उद्धरण, यदि कोई मसीह में है, तो वह एक नई सृष्टि है। पुराना बीत चुका है।

देखो, वह नई बात आ गई है। यह सब कुछ परमेश्वर की ओर से है, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेलमिलाप कर लिया है। 2 कुरिन्थियों 5:17 और 18।

मसीह के साथ विश्वास की एकता का एक आशीर्वाद ईश्वरीय निवास है। वास्तव में, जैसा कि हमने देखा है, मसीह के साथ निरंतर और जीवित एकता ही निवास है। जब परमेश्वर हमें अपने पुत्र के साथ जोड़ता है तो हमें एक आत्मा देता है।

और वह आत्मा न केवल हमें मसीह से जोड़ती है, बल्कि वह हमारे भीतर वास करने आती है। यह वह आत्मा है जो हमें मसीह से जोड़ती है, और वास्तव में, त्रिदेव से, लेकिन विशेष रूप से वह आत्मा जो हमारे भीतर वास करती है। मसीह में हमारे लिए परमेश्वर के महान प्रेम के कारण, उसने कृपापूर्वक हमें अपने पुत्र के उद्धारक कार्यक्रमों में भाग लेने की अनुमति दी है।

जैसा कि हमने देखा, मसीह के साथ एक होने का अर्थ है उसकी कहानी में भाग लेना। पौलुस केवल कुलुस्सियों में सिखाता है, मसीह के साथ तुम मर गए, 2.20। तुम मसीह के साथ जी उठे हो, 3:1। तुम मर गए हो, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है, पद 3। जब मसीह, जो तुम्हारा जीवन है, प्रकट होता है, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट होगे, पद 4। तो, नई सृष्टि में मसीह के साथ एकता का अंतिम परिणाम मनुष्यों का अंतिम पुनरुत्थान और मुक्ति और स्वर्ग और पृथ्वी की अंतिम बहाली है। मैंने बाइबल की पूरी कहानी में मसीह के साथ एकता के इस अध्ययन का निष्कर्ष पढ़ा।

यह बाइबिल की कहानी में मसीह के साथ एकता के हमारे सर्वेक्षण को पूरा करता है। अपने लोगों को बचाने के लिए परमेश्वर पिता की शाश्वत योजना में उन्हें आध्यात्मिक रूप से अपने पुत्र से जोड़ने की योजना शामिल थी। उसने अपने साथ संगति के लिए मनुष्यों को अपनी छवि में बनाया।

इसका मतलब है कि उसने उन्हें अपने बेटे की सच्ची छवि की समानता में बनाया। हालाँकि, पतन में, उन्होंने उसकी भलाई के खिलाफ विद्रोह किया और भगवान और मसीह से अलग हो गए। बेटा अवतार में एक इंसान बनने के लिए नीचे गिर गया।

वह हम में से एक बन गया ताकि हम सुसमाचार में विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से उसके साथ जुड़ सकें। अवतार ने यीशु को एक पाप रहित जीवन जीने, मरने और जी उठने, उद्धार के कार्य को पूरा करने में सक्षम बनाया। स्वर्गारोहण के बाद, यीशु ने चर्च पर अपनी पवित्र आत्मा उंडेली, जिससे विश्वासियों को मसीह से जोड़ा गया।

आत्मा का यह बंधन, जिसे मसीह के साथ विश्वास की एकता के रूप में जाना जाता है, व्यक्तिगत और सामूहिक, वर्तमान और स्थायी, निश्चित और बढ़ता हुआ, पहले से ही और अभी तक नहीं है। जब यीशु वापस लौटेगा, तो एकता पूर्ण और संपूर्ण होगी क्योंकि परमेश्वर के पुनर्जीवित लोग नई पृथ्वी पर अनंत काल तक पवित्र त्रिदेव के साथ रहेंगे। हमारे अगले व्याख्यान में, प्रभु की इच्छा से, हम मसीह के साथ एकता के कुछ व्यवस्थित धर्मशास्त्र में संलग्न होंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 19 है, मसीह के साथ एकता और बाइबिल की कहानी: अनंत काल, सृष्टि, पतन, अवतार, मसीह का कार्य और नई सृष्टि।